सितम्बर 2018

सामान्य ज्ञान दर्पण

वर्ष 31 द्वितीय अंक

इस अंक में...

7 सम्पादकीय

विशेष स्तम्भ

9 फ्रांस दूसरी बार फीफा विश्व कप का विजेता

10 समसामयिक सामान्य ज्ञान

15 आर्थिक परिदृश्य

19 राष्ट्रीय परिदृश्य

22 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य

27 क्रीड़ा जगत्

31 रोजगार समाचार

35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य

36 विज्ञान समाचार

39 अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं

41 सारभूत तत्व कोष

लेख

45 समसामयिक आर्थिक लेख—भारत के लिए अश्गाबात समझौते के निहितार्थ

47 विधि/समाजशास्त्रीय लेख—बच्चों के साथ बढ़ते लैंगिक अपराध और भारतीय समाज

50 जेनेटिक लेख—डीएनए कानून : खुल जाएंगे जिन्दगी के राज

52 कॅरियर लेख—कर्मचारी चयन आयोग संयुक्त स्नातक स्तरीय परीक्षा—2018

58 शैक्षिक लेख—'स्वयं' सीखने का 'मूक' तरीका

59 ऊर्जा लेख—तर्क संगत हो पेट्रो उत्पाद की कीमतें

हल प्रश्न-पत्र

60 उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद् सहायक अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2018

64 इन्टैलीजेन्स ब्यूरो असिस्टेंट सेन्ट्रल इन्टैलीजेन्स ऑफीसर (एक्जीक्यूटिव) ग्रेड-II परीक्षा, 2017

आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित बैंक स्पेशलिस्ट ऑफीसर (आई.टी.) परीक्षा, 2017

71 तर्कशक्ति

76 संख्यात्मक अभियोग्यता

84 English Language

89 उत्तराखण्ड शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2017

108 मध्य प्रदेश पुलिस आरक्षक (जनरल ड्यूटी) भर्ती परीक्षा, 2017

114 आगामी रेलवे भर्ती बोर्ड द्वारा आयोजित असिस्टेंट लोको पायलट/तकनीशियन (स्टेज-I) भर्ती परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

119 आगामी रेलवे भर्ती बोर्ड ग्रुप 'डी' कम्प्यूटर आधारित परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

विविध/सामान्य

124 सामान्य जानकारी—कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण क्षेत्र में अनुसंधान, विकास एवं प्रचार-प्रसार गतिविधियों के बढ़ते चरण : एक दृष्टि में

127 क्या आप परिचित हैं ?

128 व्यक्ति परिचय

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. **-सम्पादक**

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

सम्पादकीय

मूल्य (Price) की अपेक्षा जीवन-मूल्य (Value) को महत्व दीजिए

प्रत्येक व्यक्ति समाज एवं संसार के बारे में अपना विशिष्ट दृष्टिकोण रखता है. इस दृष्टिकोण का निर्माण उस वातावरण एवं उन विचारधाराओं के अनुसार होता है, जिनके मध्य उसका लालन/पालन होता है. दुःख एवं कष्ट के वातावरण में पलने वाले बालक बड़े होने पर भी दुनिया को उसी दृष्टि से देखते हैं, क्योंकि उनकी मानसिकता उसी की अभ्यस्त हो जाती है. कहावत है–सारी दुनिया व्यक्ति को अपनी जैसी प्रतीत होती है. जिस रंग का चश्मा लगा होता है, व्यक्ति उसी रंग में रंगी हुई दुनिया को देखता है. ये ही सब तत्व व्यक्ति की मानसिकता एवं उसके चरित्र का निर्माण करने के हेतु बनते हैं. प्रत्येक विचार, प्रत्येक शब्द और प्रत्येक कार्य उस दृष्टि का प्रतिफलन होता है जिससे हम दुनिया को, अन्य व्यक्तियों को देखते हैं और उसी दृष्टिकोण के आधार पर हम अपने प्रति दुनिया वालों के व्यवहार की आशा करते हैं. समाज के बारे में हम जो कुछ पढ़ते हैं या सुनते हैं, वह प्रायः हमारी मान्यताओं एवं आशाओं से मेल नहीं रखता है. इस प्रकार हमारा जीवन दोहरी मान्यताओं एवं विचार-धाराओं के भँवर जाल में फँस जाता है. तब हम इस विषम स्थिति से मुक्ति के लिए प्रयत्न करते हैं–गुरुजनों से निर्देश लेते हैं, मित्रों से परामर्श लेते हैं–आदि. प्रतिकूल एवं विषम परिस्थितियों में अधिकांश व्यक्ति परमात्मा/भगवान की याद करते हैं, उनसे सहायता की याचना करते हैं, क्योंकि इससे उनके मन को शांति और चैन की अनुभूति होती है.

मनुष्यों का एक वर्ग ऐसा भी है, जो इस प्रकार का कोई प्रयत्न नहीं करता है, वह अपनी अशांत एवं उपद्रववादी स्थिति में ही सुख-शांति और प्रसन्नता का अनुभव करता है. इस वर्ग के एक व्यक्ति का कथन था कि शांति की खोज क्यों की जाए–उसकी क्या आवश्यकता है? हमारी स्वाभाविक मानसिक स्थिति ही हमको सब कुछ दे सकती है, क्योंकि नियति भी वही है. मेरा असंतोष, मेरी अशांति मेरे लिए प्रेरणा का कार्य करते हैं और मैं अपने जीवन-पथ पर अग्रसर बना रहता हूँ. उनका कहना है कि मेरी यह मानसिकता बहुत बड़ी सीमा तक मुझे भय एवं आशंकाओं से मुक्त रखती है. मैं अपने प्रस्तुत जीवन से अभिभूत रहता हूँ और सदैव ऊर्जायुक्त रहता हूँ. इस सन्दर्भ में वह बैंजामिन डिज़रैली के कथन को उद्धृत करके अपने वैचारिक पक्ष का समर्थन भी करते हैं–We are not creatures of circumstances, but we are creators of circumstances अर्थात् हम परिस्थितियों के बालक (देन) नहीं हैं, हम उनके जनक हैं, हम परिस्थितियों की रचना करते हैं.